अरस्तु के कारणता का सिद्धांत

अरस्तु का कहना है कि हमारा संसार परिणामी और गतिशील है| यह परिणाम और गति एक निश्चित लक्ष्य के कारण होती है| गति या परिणाम वस्तुतः विकास है| यह विकास द्रव्य का स्वरूप की ओर विकास, साध्य का सिद्ध की ओर विकास है| अरस्तू ने प्रत्येक गति या परिणाम की चार कारण स्वीकार किए हैं अर्थात उपादान कारण, निमित्त कारण, स्वरूप कारण और लक्ष्य कारण| उदाहरण के लिए संगमरमर की प्रतिमा को ही लीजिए| इसके लिए आवश्यकता है संगमरमर की, निर्माता की, निर्माता के मस्तिष्क में प्रतिमा के स्वरूप की और प्रतिमा बनाने के लक्ष्य की|

यह सर्वमान्य बात है कि प्रत्येक घटना का कोई ना कोई कारण होता है| एक मूलभूत वैज्ञानिक मान्यता है तथा साधारण व्यक्ति नीरज बाद रूप में इस बात में विश्वास करता है| वैज्ञानिक जिन बातों को एक मान्यता के रूप में स्वीकार कर लेता है, दर्शन उसकी भी छानबीन करता है| इसलिए दार्शनिक यहां भी विवेचन के द्वारा यह स्पष्ट रूप से यह समझना चाहता है कि आखिर या कहने का वास्तविक अर्थ क्या है कि प्रत्येक घटना का कोई ना कोई कारण होता है| फिर कारण से आखिर क्या तात्पर्य है? कारण में और घटना में जिसे साधारण तक कार्य कहा जाता है किस प्रकार का संबंध है| इसी तरह के प्रश्न दार्शनिक के मन में उठते हैं जिनका सही उत्तर ढूंढना चाहता है| इस संबंध में अनेकों दार्शनिकों ने अपने-अपने मत प्रस्तुत किए हैं| अरस्तु एक दार्शनिक थे और इसलिए उनकी कारण संबंधी धारणा भी दार्शनिक है जिसके अंतर्गत चीजों की घटनाओं की उत्पत्ति के संबंध में कैसे? कृष्

प्रश्न के अलावा क्यों? प्रश्न भी निहित है| अरस्तु जब किसी घटना की उत्पत्ति के कारण की बात करते हैं तो वे इस संबंध में इन दोनों ही प्रश्नों का समाधान चाहते हैं कि उस घटना की उत्पत्ति कैसे हुई तथा क्यों हुई| दूसरे शब्दों में अरस्तु की कारणता संबंधी धारणा मैं कारण तथा हेतु दोनों की धारणाएं सम्मिलित हैं| कारण का संबंध समय की दृष्टि से पूर्ववर्ती से होता है परंतु हेतु का संबंध तार्किक या वैचारिक दृष्टि से पूर्ववर्ती से होता है जो समय की दृष्टि से पूर्ववर्ती नहीं भी हो सकता है| आमतौर पर हेतु अथवा क्यों ? का संबंध घटना की उत्पत्ति के प्रवचन या लक्ष्य आदि से होता है| अरस्तु दार्शनिक थे और इसलिए उनका मूल प्रश्न विश्व की उत्पत्ति विषयक समस्या को हल करना था जिसके अंदर यह दोनों ही प्रश्न निहित थे कि विश्व की उत्पत्ति कैसे हुई तथा क्यों हुई| इसी दृष्टि से कारण के संबंध में उन्होंने एक व्यापक सिद्धांत दिया जो दर्शन के क्षेत्र में पड़ा महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ| अरस्तु के अनुसार किस चीज की उत्पत्ति के पीछे चार प्रकार के कारण होते हैं जिन में से किसी एक की उपस्थिति से उस वस्तु की उत्पत्ति नहीं हो जाती बल्कि उसकी उत्पत्ति चारों का संयुक्त परिणाम होती है-

1• उपादान कारण

किसी भी वस्तु के निर्माण में जिस उपादान या कच्चे माल का व्यवहार होता है उसे ही उसका उपादान कारण करते हैं| उदाहरण के लिए घड़े के निर्माण में मिट्टी, कुर्सी के निर्माण में लकड़ी तथा कपड़े के निर्माण में धागा उपादान कारण है| उसी प्रकार विश्व की उत्पत्ति संबंधी मौलिक तत्व वैज्ञानिक विचारधारा के तहत परमाणु को उपादान कारण के रूप में माना जाता है|

2• निमित्त कारण

उत्पादन में शक्ति या गति प्रदान कर इसमें जो परिवर्तन लाता है उसे ही किसी वस्तु का निमित्त कारण कहते हैं| पाताल में इस परिवर्तन के द्वारा ही किसी वस्तु की उत्पत्ति होती है| उदाहरण के लिए घड़ी के निर्माण में कुमार, कुर्सी के निर्माण में बढ़ाई तथा कपड़े के निर्माण में जुलाहा निमित्त कारण है, क्योंकि इन्हीं के द्वारा दी हुई शक्ति या गति के द्वारा उपादान कारण का कच्चा स्वरूप वस्तु में परिवर्तित होता है|

3• आकारिक कारण

किसी भी वस्तु का विश्लेषण करने पर उसमें हमें दो चीजें मिलती हैं- एक तो उसके विषय वस्तु तथा दूसरा आकार| घड़ी तथा मूर्ति की विषय वस्तु एक ही है परंतु आकार भिन्न-भिन्न है| उसी प्रकार कुर्सी तथा मेज का धातु या कच्चा माल एक ही है- लकड़ी परंतु दोनों के आकार भिन्न भिन्न हैं| आकार भी किसी वस्तु की उत्पत्ति का कारण होता है और इस अर्थ में निमित्त कारण के अंतर्गत जो कच्चे माल को एक निश्चित रूप या आकार में आकार मैं ढालने की प्रेरणा होती है उसी के कारण वह कच्चे माल को एक खास दिशा में

मोड़ता है| कच्चे माल को एक निश्चित दिशा में गति प्रदान करने वाला यह आकार ही होता है जो निमित्त कारण के मन के अंदर मौजूद रहता है| इस निश्चित रूप या आकार को ही वस्तुओं का आकारिक कारण करते हैं| एक ही उपादान लकड़ी से कभी कुर्सी और कभी मेज बनाए जाने का कारण आकारिक कारण ही होता है|

4• प्रयोजन कारण

किसी वस्तु के निर्माण के पीछे जो प्रयोजन अथवा लक्ष्य होता है आज इसकी पूर्ति वस्तु के निर्माण के द्वारा हो जाती है, उससे ही उस वस्तु का प्रयोजन कारण करते हैं| इस प्रकार वस्तु का प्रयोग कारण ही उसके निर्माण की सारी क्रिया को एक निश्चित दिशा में प्रेरित करता है| कोई भी मूर्ति या कुर्सी आदि जिस अंतिम रूप में बनकर तैयार होती है यही उसके निर्माण का प्रयोजन कारण है, क्योंकि उसी की ओर, उसी की सिद्धि के लिए सारी क्रिया प्रेरित थी|

कारण के उपर्युक्त प्रकार के विश्लेषण के पीछे अरस्तु का मूल लक्ष्य था विश्व की वस्तुओं की एक व्यापक दार्शनिक व्याख्या प्रस्तुत करना और यह काम उन्होंने पतला कर किया कि किसी वस्तु के निर्माण में दो मूल तत्व है- उसकी वस्तु तथा उसका आकार| वस्तु को उन्होंने मात्र संभावना की संज्ञा दी तथा आकार को वास्तविकता की| इसलिए किसी भी वस्तु के निर्माण का अर्थ है मात्र संभावना का वास्तविकता में परिवर्तन| इसलिए किसी भी निर्माण का मूल प्रेरक अथवा लक्ष्य उसका आकार है| संभावना से वास्तविकता में परिवर्तन होना ही किसी भी निर्माण का लक्ष्य है|